कृषि प्रधान देश का नायक सदियों से शोषित, पीड़ित और दुखी है। वह अपने आधिकार के लिए समय-समय पर आंदोलन तथा हड़ताल करता आ रहा है लेकिन उसको प्रत्येक जगह उपेक्षा के अलावा कुछ भी नहीं मिला है। किसानों की फसल कभी ओला-वृष्टि से तो कभी सूखे का शिकार होती रही है और हो रही है। इन आपदाओं में से जो फसल फलती-फूलती है उसको भी सही मूल्य नहीं मिलता है।

हिंदी साहित्य में संजीव द्वारा रचित 'फाँस' और विश्वास पाटील द्वारा मराठी साहित्य में रचित 'पांगिरा' उपन्यास किसान जीवन के यथार्थ को केंद्र में रखकर लिखे गए हैं। 'फाँस' उपन्यास में पिछले दो दशकों से देशभर में तीन लाख से ज्यादा हो चुकी आत्महत्याएं और अस्सी हजार कृषि छोड़ चुके किसानों की महागाथा को दर्ज किया गया है। इन आत्महत्याओं के पीछे उपन्यासकार ने मूल समस्या बीटी कॉटन कपास को दिखाया है। इस विलायती बीटी कॉटन कपास ने 2004 के करीब विदर्भ के साथ-साथ भारतीय किसानों को प्रभावित किया था लेकिन दो-तीन साल बाद ही इसने अपनी नपुसंकता दिखा दी जिससे किसानों के सामने कई समस्याएं आ पड़ी। आशा कर्ज का भारी बोझ तथा कपास को सही मूल्य नहीं मिलने के कारण आत्महत्या का रास्ता अपनाती है। साँईपुर गाँव के किसान सरकार से लिखित रूप में आत्महत्या करने की अनुमति माँगते हैं। विजयेन्द्र सरकार से प्रश्न करता है कि आत्महत्या करते हुए किन-किन बातों का ख्याल रखा जाए? कब और कैसे की जाती है आत्महत्या? किस पंडित से पूछकर? किसानों की बेकारी तथा बदहाली का जिम्मेदार सरकार की भ्रष्ट नीतियाँ है। 'पांगिरा' में भी इससे मिलती-जुलती स्थिति दिखाई देती है। मंडी में प्याज की ज्यादा मात्रा होने से प्याज विक्रेता अपनी मनमानी से प्याज की बोली लगाते हैं तथा किसानों द्वारा विरोध करने से प्याज खरीदना बंद करते हैं। अत: किसान विवश होकर हिंसा को अपनाते हैं तथा प्याज विक्रेताओं की मिलीभगत को तोड़ने का प्रयास करते हैं लेकिन पुलिस दल किसानों पर लाटी तथा गोली चार्ज करती है। इस अफरा-तफरी में पन्द्रह किसानों की हत्याएं होती है। ये किसानों की हत्याएं नहीं बल्कि आत्महत्याएं हैं। किसान कीड़े-मकौड़े तथा जानवरों से भी बदतर जीवन जीने से बेहतर शोषण के खिलाफ लड़ते-लड़ते प्राण त्यागना मंजूर करते हैं।

'फाँस' एवं 'पांगिरा' में किसान पारिवारिक स्तर पर भाई-भाई, पति-पत्नी और पिता-पुत्र के बीच टकराते हुए नजर आते हैं। इसका सबसे बड़ा कारण 'अर्थ' है। किसानों की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण समग्र परिवार बिखर रहे हैं। 'पांगिरा' में पारिवारिक बिखराव के पीछे राजनीतिक षडयंत्र भी दिखाई देता है। सोकजीराव पांगिरा गाँव का मुखिया है जो मुरार पाटील तथा उनके बेटे बाजीराव के बीच

फूट डालता है और बाजीराव की जमीन हड़प लेता है। भारतीय किसान गली से लेकर दिल्ली तक राजनीतिक दाँव पेच में जकड़ा हुआ है।

भारतीय किसान कृषि से उब चुका है। 'फाँस' का मोहन किसान से मजदूर बनना चाहता है। सदा घोषणा करता है कि वह अगले साल किसानी छोड़ रहा है। धनौर गाँव का दिल्लू पाँच एकड़ जमीन बेचकर चपरासी की नौकरी करता है। कुलमिलाकर कहा जाए तो किसानों की बेकारी, बदहाली और दयनीय स्थिति का सबसे बड़ा कारण सरकार का किसानों के प्रति उपेक्षा तथा उनके अनाज को सही मूल्य न देना है। इसी के परिणाम स्वरुप वह कर्ज के भयंकर आतंक में डूब जाता है और अंत में आत्महत्याओं की ओर अग्रसर होता है। इस देश को बचाना हो तथा भविष्य में तरक्की करना हो तो किसानों की आत्महत्याएँ रोकना बहुत ही जरुरी है।